

PROF. SHARADA SRINIVASAN

Prof. Sharada Srinivasan is a Professor at the National Institute of Advanced Studies (NIAS), Bengaluru. She has made pioneering contributions to the study of archaeology and history of art from the perspective of exploring engineering applications in these disciplines. She has earned her PhD from the Institute of Archaeology, University College London (1996) on Archaeometallurgy of South Indian bronzes; MA from School of Oriental & African Studies, London (1989) and BTech in Engineering Physics from IIT Bombay (1987).

2. Born on January 16, 1966, Prof. Srinivasan's landmark contributions include archaeometric characterization of bronzes of South India using lead isotope analysis and archaeometallurgical studies on ancient mining and metallurgy in southern India These span studies on high carbon wootz steel and documentation of artisanal technologies such as Aranmula metal mirror making, bronze casting at Swamimalai and ancient traditions of high-tin bronze working, while she has worked on artifacts in the Government Museum, Chennai, British Museum, Victoria and Albert Museum, London, ASI and so on. She has skillfully integrated archaeological, artistic and historic perspectives with scientific perspectives in her research papers numbering about seventy.

3. Prof. Srinivasan is first author of the book 'India's Legendary Wootz Steel' and contributing author to 'Ecstasy of Classical Art', the bronze catalogue of National Museum, Delhi and co-editor of 'Digital Hampi'. She is also an acclaimed performer of the classical dance form of Bharatnatyam and has given numerous lecture-demonstrations such as on the artistic and scientific perspectives on the Chola Nataraja bronze at international museums such as Royal Academy of Arts, London (2007) and with a photo-exhibition on the theme at Space City, Toulouse (2009) apart from national venues.

4. Prof. Srinivasan is a Fellow of the Royal Asiatic Society of Great Britain and World Academy of Art and Science. She has many awards to her credit, few of the prominent ones include the Dr. Kalpana Chawla Young Women Scientist Award for 2011, the Indian Institute of Metals, Certificate of Excellence 2007 and Materials Research Society of India Medal 2006, the Malti B. Nagar Ethnoarchaeology Award (2005), and the DST-SERC Young Scientist Fellowship, the Flinders Petrie Medal 1989 from University of London, the Materials Research Society Graduate Student Award 1996, the DST Nurture Scheme and Young Scientist Awards. She has been a Forbes Research Associate at the Department of Scientific Research and Conservation, Freer Gallery of Art, Smithsonian Institution, USA in 1999 and Homi Bhabha Fellow at Indian Institute of Science, Bangalore from 1996-98.

पद्म श्री



प्रो. शारदा श्रीनिवासन



प्रो. शारदा श्रीनिवासन नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज (एनआईएएस), बेंगलुरु में प्रोफेसर हैं। आपने पुरातत्व और कला के इतिहास के अध्ययन के क्षेत्र में इंजीनियरिंग अनुप्रयोगों की खोज के दृष्टिकोण से में अग्रणी योगदान दिया है, आपने दक्षिण भारतीय कांसा पुरातत्वधातु विज्ञान में पुरातत्व संस्थान, यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन से अपनी पीएचडी (1996) की है; स्कूल ऑफ ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज लंदन से एमए (1989), और आईआईटी बम्बई से इंजीनियरिंग फिजिक्स में बीटेक (1987) की है।

2. आपका जन्म 16 जनवरी, 1966 में हुआ था। आपके ऐतिहासिक योगदान में दक्षिण भारत में प्राचीन खनन और धातु विज्ञान पर प्रमुख आइसोटोप एनालिसिस और पुरातात्विक अध्ययन का उपयोग करते हुए दक्षिण भारत के कांस्य के पुरातात्विक लक्षण का वर्णन करना शामिल हैं। अरनमुला मेटल मिरर मेकिंग, स्वामीमलाई में कांस्य ढलाई और उच्च-टिन कांस्य की प्राचीन परंपराएँ जैसी उच्च कार्बन वूटज़ स्टील और कारीगर प्रौद्योगिकियों के प्रलेखन के क्षेत्र में व्यापक अध्ययन के साथ-साथ आपने सरकारी संग्रहालय, चेन्नई, ब्रिटिश संग्रहालय, विक्टोरिया और अल्बर्ट संग्रहालय, लंदन, एएसआई तथा और भी संस्थानों में कलाकृतियों पर काम किया है। आपने अपने लगभग सत्तर शोध पत्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ पुरातात्विक, कलात्मक और ऐतिहासिक दृष्टिकोणों को कुशलता से जोड़ दिया है।

3. आप 'इंडियाज लेजेंडरी वुट्ज़ स्टील' पुस्तक की पहली लेखिका और 'एक्सटेसी ऑफ क्लासिकल आर्ट', नेशनल म्यूजियम, दिल्ली की कांस्य सूची की सह लेखिका और 'डिजिटल हम्पी' के सह-संपादक हैं। आप भारतनाट्यम शास्त्रीय नृत्य की एक प्रशंसित कलाकार भी हैं और आपने कई व्याख्यान-प्रदर्शन दिए हैं, जिनमें रॉयल अकेडमी ऑफ़ आर्ट्स, लंदन (2007) जैसे अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालयों में चोल नटराज कांस्य का कलात्मक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण और राष्ट्रीय स्थलों के अलावा स्पेस सिटी, टूलूज़ (2009) थीम पर फोटो-प्रदर्शनी आदि शामिल हैं।

4. आप रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन और वर्ल्ड एकेडमी ऑफ आर्ट एंड साइंस की फेलो हैं। आपको कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जिनमें से कुछ पुरस्कारों में 2011 के लिए डॉ. कल्पना चावला युवा महिला वैज्ञानिक पुरस्कार, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मेटल्स, सर्टिफिकेट ऑफ एक्सीलेंस 2007 और मैटीरियल रिसर्च सोसायटी ऑफ इंडिया मेडल 2006, मालती बी. नगर एथनोआर्कोलॉजी अवार्ड (2005), और डीएसटी-एसईआरसी यंग साइंटिस्ट फैलोशिप, लंदन यूनिवर्सिटी से फ्लिंडर्स पेट्री मेडल, मैटिरियल रिसर्च सोसाइटी ग्रेजुएट स्टूडेंट पुरस्कार 1996, डीएसटी पोषण योजना और युवा वैज्ञानिक अवार्ड शामिल है। आप 1999 में वैज्ञानिक अनुसंधान और संरक्षण विभाग, फ्रीरर गैलरी ऑफ आर्ट, स्मिथसोनियन इंस्टीट्यूशन, यूएसए में फोर्ब्स रिसर्च एसोसिएट और 1996-98 तक भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलोर में होमी भाभा फैलो रही हैं।